

गौरैया और बन्दर-पंचतंत्र

किसी जंगल के एक घने वृक्ष की शाखाओं पर चिडा-चिडी का एक जोडा रहता था । अपने घोंसले में दोनों बडे सुख से रहते थे ।

सर्दियों का मौसम था । एक दिन हेमन्त की ठंडी हवा चलने लगी और साथ में बूँदा-बांदी भी शुरु हो गई । उस समय एक बन्दर बर्फीली हवा और बरसात से ठिठुरता हुआ उस वृक्ष की शाखा पर आ बैठा।

जाडे के मारे उसके दांत कटकटा रहे थे । उसे देखकर चिडिया ने कहा----"अरे ! तुम कौन हो ? देखने में तो तुम्हारा चेहरा आदमियों का सा है; हाथ-पैर भी हैं तुम्हारे । फिर भी तुम यहाँ बैठे हो, घर बनाकर क्यों नहीं रहते ?"

बन्दर बोला ----"अरी ! तुम से चुप नहीं रहा जाता ? तू अपना काम कर । मेरा उपहास क्यों करती है ?"

चिडिया फिर भी कुछ कहती गई । वह चिड गया । क्रोध में आकर उसने चिडिया के उस घोंसले को तोड-फोड डाला जिसमें चिडा-चिडी सुख से रहते थे ।

सीख : हर किसी को उपदेश नहीं देना चाहिये। बुद्धिमान् को दी हुई शिक्षा का ही फल होता है, मूर्ख को दी हुई शिक्षा का फल कई बार उल्टा निकल आता है।

गौरैया और गजूर-पंजुंड

किमी एंगल के एक अने वृक्ष की सायाण पर गिरा-गिरी का एक ऐरा रहता था। सपने भेंभले में दैनें गुरु भाप में रहते थे। भिखे का भेभभ था। एक दिन कभतु की ंरी रुवा गलने लगी और भाष में गंदा-गंदा ही मुरु के गरें। उम भभय एक गजूर गृहीली रुवा और गरभाउ में िरता रुम उम वृक्ष की साया पर मु गैण।

एके के भारे उमके एंडु कएकए रहते थे। उमें टोपकर गिरिषा ने कहा----"भरे ! तुम की न के ? टोपने में ते तुम्हारा गिरा मुदभिखे का भा है; काष-पैर ही है तुम्हारे। फिर ही तुम यकी गैठे के, अर गनाकर कुं नकीं रहते ?"

गजूर गैला ----"भरी ! तुम में गुप नकीं रहता एता ? तु सपना काभ कर। मेरा उपकाभ कुं करती है ?" गिरिषा फिर ही कुक करती गरें। वरु गिरु गथा। कुण में मुकर उमने गिरिषा के उम भेंभले के डेरु-डेरु रुला एभमें गिरा-गिरी भाप में रहते थे।

भीष : रुर किमी के उपदिस नकीं टन गारिषे। वृष्टिभावा के पी करें मिखा का की टल केडा है, भूत के पी करें मिखा का टल करें गर उखा निकल मुता है।

सुवार्द - कुलपीप पर